॥ श्री हनुमते नमः ॥

श्री बजरंग बाण

पाठ एक छपी पुस्तिका के अनुसार, अक्षरशः

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम प्रतीति ते, विनय करैं सनमान।
तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥

॥ चौपाई ॥

१ जय हनुमंत संत हितकारी।
सुन लीजै प्रभु अरज हमारी॥

२ जन के काज विलंब न कीजै।
आतुर दौरि महा सुख दीजै॥

३ जैसे कूदि सिंधु महिपारा।
सुरसा बदन पैठि विस्तारा॥

४ आगे जाय लंकिनी रोका।
मारेहु लात गई सुर लोका॥

५ जाय विभीषन को सुख दीन्हा।
सीता निरखि परमपद लीन्हा॥

६ बाग उजारि सिंधु महं बोरा।
अति आतुर जमकातर तोरा॥

७ अक्षय कुमार को मारि संहारा।
लूम लपेट लंक को जारा॥

८ लाह समान लंक जरि गई।
जय जय धुनि सुरपुर में भई॥

९ अब विलंब केहि कारन स्वामी।
कृपा करहु उर अंतर्यामी॥

१० जय जय लखन प्राण के दाता।
आतुर होय दुःख करहु निपाता॥

११ जै गिरिधर जै जै सुख सागर।
सुर समूह समरथ भटनागर॥

१२ ॐ हनु हनु हनु हनुमंत हठीले।
बैरिहि मारु बज्र की कीले॥

१३ गदा बज्र लै बैरिहिं मारो।
महाराज प्रभु दास उबारो॥

१४ ॐ कार हुंकार महाप्रभु धावो।
बज्र गदा हनु विलंब न लावो॥

१५ ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमंत कपीसा।
ॐ हुं हुं हुं हनु अरि उर सीसा॥

१६ सत्य होहु हरि शपथ पायके।
राम दूत धरु मारु जाय के॥

१७ जय जय जय हनुमंत अगाधा।
दुःख पावत जन केहि अपराधा॥

१८ पूजा जप तप नेम अचारा।
नहिं जानत हौं दास तुम्हारा॥

१९ वन उपवन मग गिरि गृह माहीं।
तुम्हरे बल हम डरपत नाहीं॥

२० पांय परौं कर जोरि मनावौं।
येहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

२१ जय अंजनि कुमार बलवंता।
शंकर सुवन वीर हनुमंता॥

२२ बदन कराल काल कुल घालक।
राम सहाय सदा प्रतिपालक॥

२३ भूत, प्रेत, पिशाच निशाचर।
अग्नि बेताल काल मारी मर॥

२४ इन्हें मारु, तोहि शपथ राम की।
राखउ नाथ मरजाद नाम की॥

२५ जनकसुता हरि दास कहावो।
ताकी शपथ विलंब न लावो॥

२६ जै जै जै धुनि होत अकासा।
सुमिरत होत दुसह दुःख नासा॥

२७ चरण शरण कर जोरि मनावौं।
यहि अवसर अब केहि गोहरावौं॥

२८ उठु उठु चलु तोहि राम दुहाई।
पांय परौं कर जोरि मनाई॥

२९ ॐ चं चं चं चपल चलंता।
ॐ हनु हनु हनु हनुमंता॥

३० ॐ हं हं हांक देत कपि चंचल।
ॐ सं सं सहमि पराने खल दल॥

३१ अपने जन को तुरत उबारो।
सुमिरत होय आनंद हमारो॥

३२ यह बजरंग बाण जेहि मारै।
ताहि कहो फिर कौन उबारै॥

३३ पाठ करै बजरंग बाण की।
हनुमत रक्षा करै प्राण की॥

३४ यह बजरंग बाण जो जापै।
ताते भूत-प्रेत सब कांपै॥

३५ धूप देय अरु जपै हमेशा।
ताके तन नहिं रहै कलेशा॥

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतिहि कपि भजै, सदा धरै उर ध्यान।
तेहि के कारज सकल सुभ, सिद्ध करैं हनुमान॥